शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

संगीत शिक्षा : अर्थ, क्षेत्र, महत्व और प्रभाव

प्राप्तिः 25.02.2022
स्वीकृतः 15.03.2022

डॉ० अनिता रानी
एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत–सितार विभाग
श्रीमती बी०डी० जैन गर्ल्स (पी०जी०) कॉलेज, आगरा
ईमेलः *dr.anita80@gmail.com*

सारांश

शिक्षा किसी देश का सामाजिक आर्थिक विकास, आत्म–विश्वास, आत्म–निर्भरता तथा वैज्ञानिक औद्योगिक प्रगति की कुंजी होती है। शिक्षा शब्द बहुअर्थी है। भाषा शब्द कोश के अनुसार इसका अर्थ है–

''किसी विद्यार्थी के सीखने, सीखाने की क्रिया, पढ़ाई, उपदेश, सीख, तालीम, गुरू के समीप विद्याभ्यास, सलाह, छः वेदागों में से वेदों के स्वर, मात्रा का निरूपक एक विधान, दबाव, शासन, सबक।''

''जीवन के जिन विभिन्न पक्षों के साथ शिक्षा का समन्वय उपेक्षित है उनमें जीविका, क्रीड़ा, कला, संस्कृति, समाज, राजनीति, प्रशासन, व्यवसाय आदि को मुख्य माना जा सकता है।''

भारत में प्रागैतिहासिक संगीत की कलात्मकता का अन्वेशण करते हुए हम पाते है कि आदिमानव रंग, रूप, गंध आदि को पहचान पाने से पहले ध्वनि, स्वर, लय की और आकृष्ट हुआ। कालान्तर में मानव की परिचित ध्वनियाँ धीरे–धीरे सांगीतिक प्रतीकों में बदलने लगीं।

संगीत मानव समाज की एक कलात्मक उपलब्धि है। यह लयकारी सांस्कृतिक परम्पराओं का एक मूर्तिमान प्रतीक है और भावना की उत्कृश्ट कृति है, अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप देने का माध्यम है। नाद से 'स्वर' और लय से 'ताल' की उत्पत्ति हुई है। इस सन्दर्भ में रिचर्ड बैगनी का निम्न कथन दृष्टव्य है :

"What music expresses, is eternal, infinite and ideal: it does not express the passion, love or longing in itself and it presents in that unlimited variety of motivation, which is the exclusive and particular characteristic of music"

प्रारम्भ में संगीत के अध्ययन–अध्यापन में संगीत के क्रियात्मक पक्ष पर ही बल दिया जाता था। संगीत के महत्व को स्वीकार करते हुए श्री उपेन्द्रचन्द्र सिंह ने अपनी कृति 'वट इज म्यूजिक' में लिखा है –

"To summarise what is music, one can safely say is it a kind of yoga system through the medium of sonours sound which act upon human organism and awaken and develop their proper functions to the extent of self-realisation-the ultimate goal of Hindu Philosophy or religion."

संगीत द्वारा स्मृति, कल्पना और रचना–शक्ति का विकास होता है।

'वसुधैव कुटुम्बकम' अर्थात पूरा विश्व हमारा कुटुम्ब है की पुनीत भावना ललित कलाओं, मुख्यतः संगीत के द्वारा ही संभव है।

संगीत शिक्षण के उद्देश्य शिक्षा के अन्य विषयों के समरूप ही है। प्राचीन काल में गुरु शिष्य को विद्या दान करना और शिष्य द्वारा शिक्षा ग्रहण करने की परम्परा ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था। सारांश यह है कि जीवन की प्रत्येक अवस्था से येन–केन–प्रकारेण संगीत को कड़ी अवश्य जुडी रहती है। शेक्सपियर ने भी संगीत के विषय में कहा है :

''The man that has no music in himself.
Nor is moved with concord of such sounds,
Is fit for treasons, stratagies and spoils,
The motions of his spirits are dull as night,
And his affection dark as Erelus,
Let no such man be trusted.''

मुख्य बिन्दु

संगीत, शिक्षा, अर्थ, क्षेत्र, महत्व, और प्रभाव।

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, ज्ञान, कला और कौशल में वृद्धि और व्यवहार में परिवर्तन लाती है। प्रसिद्ध जर्मन शिक्षाशास्त्री पेस्टलाजी के द्वारा–''शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वभाविक सम्यक् और प्रगतिशील विकास है।''

स्वामी विवेकानन्द द्वारा– ''मनुष्य की अर्न्तनिहीत पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

''महिमा शिक्षा की है अपार,
हरती दुर्गती का अन्धकार,
कलुशित मन का कर परिष्कार,
भरती उसमें उत्तम विचार।''

शिक्षा किसी देश का सामाजिक आर्थिक विकास, आत्म–विश्वास, आत्म–निर्भरता तथा वैज्ञानिक औद्योगिक प्रगति की कुंजी होती है। शिक्षा शब्द बहुअर्थी है। भाषा शब्द कोश के अनुसार इसका अर्थ है–

''किसी विद्यार्थी के सीखने, सीखाने की क्रिया, पढ़ाई, उपदेश, सीख, तालीम, गुरू के समीप विद्याभ्यास, सलाह, छः वेदागों में से वेदों के स्वर, मात्रा का निरूपक एक विधान, दबाव, शासन, सबक।''[1]

वास्तव में देखा जाए तो शिक्षा ज्ञान अथवा जीविकोपार्जन का साधन मात्र नही है अपितु शिक्षा सम्पूर्ण जीवन के परिष्कार एवं विकास की प्रणाली है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का चहुमुखी विकास करना है। शिक्षा का उद्देश्य केवल इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित इत्यादि विषयों का ज्ञान कराना मात्र नही, वरन् बालक की रूचियों तथा उसकी जन्म से ईश्वरीय देन प्रतिभा व शक्तियों का सम्यक विकास करना है।

''जीवन के जिन विभिन्न पक्षों के साथ शिक्षा का समन्वय उपेक्षित है उनमें जीविका, क्रीड़ा, कला, संस्कृति, समाज, राजनीति, प्रशासन, व्यवसाय आदि को मुख्य माना जा सकता है।''[2]

भारत में प्रागैतिहासिक संगीत की कलात्मकता का अन्वेशण करते हुए हम पाते है कि आदिमानव रंग, रूप, गंध आदि को पहचान पाने से पहले ध्वनि, स्वर, लय की और आकृष्ट हुआ। कालान्तर में मानव की परिचित ध्वनियाँ धीरे–धीरे सांगीतिक प्रतीकों में बदलने लगीं।

संगीत मानव समाज की एक कलात्मक उपलब्धि है। यह लयकारी सांस्कृतिक परम्पराओं का एक मूर्तिमान प्रतीक है और भावना की उत्कृष्ट कृति है, अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप देने का माध्यम है। इसमें हृदयस्पर्शिता है और वास्तव में मन के सूक्ष्म भावों को नाद के द्वारा व्यक्त करने की कला संगीत है। संगीत कला मुख्यतः प्रयोगात्मक कला है, जिसका माध्यम नाद है और यही नादात्मक कलाकृति प्रस्तुत करने के लिए तत्संबद्ध नियमों का अनुसरण आवश्यक है। नाद से 'स्वर' और लय से 'ताल' की उत्पत्ति हुई है। इस सन्दर्भ में रिचर्ड बैगनी का निम्न कथन दृष्टव्य है :

"What music expresses, is eternal, infinite and ideal: it does not express the passion, love or longing in itself and it presents in that unlimited variety of motivation, which is the exclusive and particular characteristic of music"

मानव के हृदयगत भावों का उद्‌गार जिस भाषा से हुआ वह संगीत की भाषा थी। रुदन और हास्य की प्रक्रिया प्राणी मात्र में अंदर व्याप्त है। इन्हीं से प्रभावित स्वर जब लय और ताल में बंध कर स्फुरित होते है, तब उनका स्पर्श सीधा हृदय से होता है और मनुष्य भाव–विभोर होकर, तन्मय होकर झूमने लगता है। यहीं संगीत का आविर्भाव होता है। संगीत मानवीय जीवन का अभिन्न अंग है। प्राकृतिक रूप से ये हमारे जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। यह मानव के श्रम प्रताड़ित जीवन को अपनी स्वर लहरियों से राहत प्रदान करता है।

संगीत प्रकृति के कण–कण में समाया है। पवन के झोंकों, सागर की लहरों, पक्षियों के कलरव, झरनों की छल–छल सभी में संगीत ही तो है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव से सम्बन्धित शोड्‌श संस्कारों में संगीत रचा बसा है। इसीलिए कहा गया है कि गाना–रोना सभी को आता है, संगीत शिक्षा का अधिकार सभी को है। अन्तर केवल इतना है कि जिस व्यक्ति को संगीत का थोडा ज्ञान है, संगीत की प्रतिभा आदि होती है। उसको संगीत सीखाना उतना कठिन नही है। जिनमें संगीत की प्रतिभा अधिक होती है उनको संगीत सीखाना आसान है। जिनकी प्रतिभा छिपी होती है उनकी प्रतिभा चमकाना भी संगीत का कार्य है। ''बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास संगीत द्वारा सुगमता से सम्पन्न हो सकता है। इसीलिए फ्रोवेल ने किंडर गार्टन प्रणाली में संगीत को पाठ्‌यक्रम का आवश्यक अंग माना।'' आज मनोविज्ञान ने यह प्रमाणित कर दिया है कि शिक्षण और पाठ्‌यक्रम आपस में एक दूसरे से गुथे हुए हैं और अलग–अलग नहीं किये जा सकते। पाठ्‌यक्रम के लिए कनिंघम का कहना है कि यह कलाकार के हाथों एक ऐसा यन्त्र है जिसमें वह अपनी प्रयोगशाला में अपने पदार्थ को अपने आदर्श के अनुसार ढाल ले। यह पदार्थ एक बहुत स्वयं–सकर्मक और संकल्न करले वाला मानव है जिसकी प्रतिक्रियाएं और उत्तर विवेक पूर्ण होती है।

पाइने ने भी पाठ्यक्रम के लिए लिखा है–

"Curriculum consits of all the situations that the school may select and conciously organise for the purpose of developing the personality of its pupils and for making behaviour changes in them."[3]

प्रारम्भ में संगीत के अध्ययन–अध्यापन में संगीत के क्रियात्मक पक्ष पर ही बल दिया जाता था। जो मंच प्रदर्शन में निपुण होता वही सम्मान का पात्र होता था किन्तु एक समय आया जब सैद्धांतिक पक्ष को मजबूती प्रदान की गई और तब वि० वि० स्तरीय संगीत–शास्त्र के विभिन्न महत्वपूर्ण पात्रों के गहन अध्यय की आवश्यकता को विद्वानों ने समझा और संगीत के महत्व को स्वीकार करते हुए श्री उपेन्द्रचन्द्र सिंह ने अपनी कृति 'वट इज म्यूजिक' में लिखा है –

"To summarise what is music, one can safely say is it a kind of yoga system through the medium of sonours sound which act upon human organism and awaken and develop their proper functions to the extent of self-realisation- the ultimate goal of Hindu Philosophy or religion." [4]

संगीत द्वारा स्मृति, कल्पना और रचना–शक्ति का विकास होता है।

'वसुधैव कुटुम्बकम' अर्थात पूरा विश्व हमारा कुटुम्ब है की पुनीत भावना ललित कलाओं, मुख्यतः संगीत के द्वारा ही संभव है।

इस प्रकार संगीत शिक्षण के उद्देश्य शिक्षा के अन्य विषयों के समरूप है। साधारण शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हो सकते है –

1. बालक की कल्पना शक्ति का विकास करना।

2. शिक्षण द्वारा बालक की स्वास्थ्य वृद्धि करना।

3. शिक्षण द्वारा बालक में एक प्रजातंत्र राज्य के सफल नागरिक दल बन सकने योग्य गुणों को उत्पन्न करना।

4. शिक्षण द्वारा बालक में व्यक्ति और समाज का महत्व दर्शाना।

5. शिक्षण द्वारा बालक की कलात्मक वृद्धि का विकास करवाना, साहित्य, कला और प्रकृति की सराहना उनका गुण–निरूपण करना।

6. शिक्षण द्वारा बालक को विज्ञान का मानव–जीवन पर प्रभाव से परिचित करवाना।

7. काम से बचे हुए समय का सदुपयोग करना।

8. शिक्षण द्वारा बालकों को भाव–प्रदर्शन सिखाना और उन्हें अच्छे–बुरे का ज्ञान करवाना।

इस प्रकार देखा गया की संगीत द्वारा स्मृति और कल्पना शक्ति का विकास, नैतिकता, नागरिकता, राष्ट्र–प्रेम आदि सदगुणों का बीजारोपण, मूल प्रवृतियों का रूपान्तर, हीं भावना का निष्कासन आदि संभव है। इसके अतिरिक्त संगीत शिक्षा का शैक्षिक, सांस्कृतिक मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक महत्व है। इसीलिए तो पाठ्यक्रम में संगीत का होना परम आवश्यक माना गया है।[5]

डॉ० ऐनी बेसेन्ट, एक यूरोपियन महिला ने, सर्वप्रथम भारतीय स्कूलों के पाठ्यक्रम में संगीत का समावेश कराया। सन 1911 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शांति निकेतन में, गाँधी जी ने 1915 में सत्याग्रह आश्रम में संगीत शिक्षण प्रारम्भ कराया। उत्तर प्रदेश, तत्कालीन यूनाइटेड प्राविन्सेज में सर्वप्रथम 1916 में कायस्थ पाठशाला इलाहाबाद में संगीत की कक्षाएं खोली गयी तथा 1925 में अन्य स्कूलों में और लगभग प्रत्येक स्कूल, कॉलेज तथा विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में संगीत का समावेश हो गया है।[6]

प्राचीन काल में संगीत शिक्षण गुरु का शिष्य को विद्या–दान करना और शिष्य द्वारा शिक्षा ग्रहण करने की परम्परा ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था। विद्या का आदान–प्रदान गुरु–शिष्य के माध्यम से संचालित होना ही भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं में से एक है।

संगीत शिक्षण के लाभों को दृष्टिगत रखते हुए आदिकाल से ही अन्य विधाओं की भांति संगीत शिक्षण की भी परम्परा चली आ रही है। एक विद्वान गुरु के सानिन्ध्य में एक ज्ञान–पिपासु शिष्य अपनी ज्ञान–पिपासा शांत करता है। विशेष रूप से संगीतांतगर्त शिक्षण की यह प्रणाली प्राचीन काल से आधुनिक काल तक चली आ रही है।[7]

शिक्षा का व्युत्पत्तिगत अर्थ है – 'शिक्ष्यते उपदिष्यते यत्र सा शिक्षा' अर्थात जिस माध्यम अथवा प्रणाली के द्वारा उपदेश दिया जाता है, वही शिक्षा है।

'संगीत शिक्षण पद्धति' सम्बन्ध में अधिकतर स्थानों पर 'व्यक्तिगत शिक्षण पद्धति' (जिसे गुरु शिष्य परम्परा कहा जाता है) का ही उल्लेख मिलता है। गुरु ने जितना अपनी तपस्या, साधना अथवा प्रयोगों से जाना वह सब उसने अपने शिष्यों में बांट दिया और शिष्यों ने भी जितना अपने गुरु द्वारा ग्रहण किया और इसे अपनी प्रतिभा, साधना एवं प्रयोगों के द्वारा विकसित किया। वास्तव में गुरु और शिष्य का योग्य मिलाप होने पर ही परम्परा टिकी रहती है।

''वाराणसी उस समय का एक महत्वपूर्ण विद्या–केंद्र था जिसमें संगीताध्यापन का स्वतंत्र विभाग था। नालंदा, विक्रमशिला तदन्तपुरी, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों में गान्धर्व का स्वतंत्र विभाग या फैकल्टी थी तथा इसके अधिष्ठाता के रूप में भारत–विख्यात संगीतज्ञों की नियुक्ति हुआ करती थी किन्तु शिक्षा प्रणाली कैसी थी, कितने विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे आदि विषयों के सम्बन्ध में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती।[8]

In the past literature on music we do not find any reference about Sangeet Shiksha Pranali. In fact there is no record in any of the old Sanskrit work on Music, classes of Music, where number of boys and number of girls were given training and practice of music together.[9]

संक्षेप में प्राचीन काल में संगीत शिक्षा गुरु पर निर्भर करती थी। पाठ्यक्रम जैसी कोई वस्तु न थी और न ही संगीत की बन्दिश को लिखने के लिए स्वरलिपि जैसी कोई सुविधा थी।

महर्षि भरत के पश्चात और मुस्लिम शासकों के आगमन के मध्य के समय में जब संगीत की शिक्षा पद्धति संगीत की इतनी उन्नत अवस्था थी कि संगीतज्ञों और हिन्दू गुरुओं को शाही सेना के साथ उत्तर में लाकर बसाया गया।

सन् 1556–1707 तक का काल संगीत की उन्नति का युग कहा जा सकता है। संगीत के प्रचार व प्रसार हेतु राजाओं अत्यधिक प्रयत्न किये। जिनमें राजा मानसिंह तोमर व मुगल सम्राटों के नाम विशेष उल्लेखनीय है। राजा मानसिंह संगीतज्ञों का आदर करता था। उसके दरबार में अनेक संगीतज्ञ भी रहते थे। उसमें बैजू, बख्शु, चरजु के नाम उल्लेखनीय है।[10]

''18 वीं शती के उत्तरार्ध मेसंगीत साधना साधारण रूप से चलती रही, इधर मुस्लिम शासकों की शक्ति क्षीण होने लगी। अंग्रेजों प्रभाव धीरे–धीरे भारत पर बढ़ता गया और इस उथल–पुथल में संगीत कला बड़े–बड़े राजाश्रयों से पृथक होकर स्वतंत्र रूप से एवं छोटी–छोटी रियासतों में पलने लगी और इन्हीं रियासतों में संगीत कला को पर्याप्त पोषण मिला।''[11]

विभिन्न गुरु परम्पराएं, निजी शैली के प्राधान्य व उसके प्रदर्शन का लोभ, रियासतों का संरक्षण और बाद में रियासतों के टूटने की स्थिति में संगीत कला को पतन से बचाने एवं आर्थिक कठिनाइयां संगीत का वंश परम्परा में सीमित होने के फलस्वरूप संगीत में घरानों की परम्परा को दृढ़ किया।[12]

कलाओं के क्षेत्र में अग्र पूजा का सम्मान केवल संगीत कला को मिला है। अतः सृष्टि के स्वर्णिम विहान से लेकर प्रलय की काली संध्या तक संगीत का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ता है। सारांश यह है कि जीवन की प्रत्येक अवस्था से येन–केन–प्रकारेण संगीत की कड़ी अवश्य जुडी रहती है। शेक्सपियर ने भी संगीत के बारे में इस प्रकार कहा है :

"The man that has no music in himself.
Nor is moved with concord of such sounds,
Is fit for treasons, stratagies and spoils,
The motions of his spirits are dull as night,
And his affection dark as Erelus,
Let no such man be trusted."

सन्दर्भ

1. शुक्ल, राम शंकर. 'रसाल' (सं०) भाषा शब्दकोश, पृष्ठ **1461.**
2. तिवारी, रामानन्द. शिक्षा संस्कृति, पृष्ठ **15.**
3. श्रीवास्तव, हरीशचंद्र. संगीत निबंध संग्रह, पृष्ठ **96.**
4. मिश्रा, शंकरलाल. संगीत निबंध संग्रह, पृष्ठ **197.**
5. कपूर, तृप्त. उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा, पृष्ठ **30.**
6. परांजपै, शरच्चन्द्र. भारतीय संगीत का इतिहास, पृष्ठ **120.**
7. कपूर, तृप्त. उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा, पृष्ठ **31.**
8. भातखण्डे. लक्ष्य संगीत, पृष्ठ **37.**
9. Ratanjankar, S. N. A comparative study of the old traditional method of Musical training and the modern Music class. P.No. 22.
10. उत्तर भारतीय संगीत का इतिहास अनुवाद डॉ० अरुण कुमार भातखण्डे. सेन, पृष्ठ **16.**
11. फजल, अबुल. आइने अकबरी, अनुवादक कोलमल एच० एस० जैरिट, भाग–3 पृष्ठ **271.**
12. कपूर, तृप्त. उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा, पृष्ठ **37.**